65

यहूदी मुकदमा और पतरस के इनकार

(26:57-75)

जैतून पहाड़ पर यीशु की गिरफ्तारी के बाद उसे महायाजक काइफा के पास और महासभा में जे जाया गया, जहां उस पर मुकदमा चलना था (26:57-68)। इस उम्मीद से कि देखें कि मुकदमे का क्या बनता है, पतरस दूर से यीशु का पीछा करता रहा। यीशु के साथ उसकी संगति का सामना होने पर पतरस ने तीन बार प्रभु का इनकार किया (26:69-75)।

यहूदी मुकदमा (26:57-68)

57और यीशु के पकड़नेवाले उस को काइफा नाम महायाजक के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। 58और पतरस दूर से उसके पीछे-पीछे महायाजक के आंगन तक गया, और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादों के साथ बैठ गया।

59महायाजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिए उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे। 60परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। 61अन्त में दो जनों ने आकर कहा, कि इसने कहा है; कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं। 62तब महायाजक ने खड़े होकर उससे कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता ? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं ? परन्तु यीशु चुप रहा: महायाजक ने उस से कहा। 63मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे। 64यीशु ने उससे कहा; तू ने आप ही कह दिया; वरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।

65तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, इस ने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन ? 66देखो, तुम ने अभी यह निन्दा सुनी है! तुम क्या समझते हो ? उन्होंने उत्तर दिया, यह वध होने के योग्य है।

67तब उन्होंने उस के मुंह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मार के कहा। 68हे मसीह, हम से भविष्यवाणी करके कह: कि किस ने मुझे मारा ?

आयत 57. यूहन्ना 18:12-24 के अनुसार यीशु को पूर्व महायाजक हन्ना के पास ले जाया गया।[1] यह लोगों पर उसके प्रभाव का सम्मान करते हुए किया गया था। बहुत से यहूदी लोग उसे ही महायाजक मानते थे, चाहे 15 ईस्वी में रोमी हाकिम वलेरियुस ग्रेटस ने उसे पद से हटा दिया

था (26:3 पर टिप्पणियां देखें)। हन्ना ने यीशु से उसके चेलों और शिक्षा के बारे में पूछताछ की और फिर उसे अपने दामाद काइफा के पास भेज दिया।[2]

मत्ती ने यह विवरण नहीं दिए, परन्तु लिखा है कि **यीशु के पकड़ने वाले उस को काइफा नाम महायाजक के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे**। यह जानते हुए कि गिरफ्तारी सुनिश्चित है महासभा के कुछ सदस्य काइफा के घर पर ही इकट्ठा हो गए थे। कोई संदेह नहीं कि काइफा ने यीशु से पूछताछ की और अपने मन में तैयारी कर ली थी कि महासभा के इकट्ठा होने पर जब उससे पूछा जाएगा तो वह क्या बताएगा। यीशु से अपनी बातचीत के बाद उसने यीशु को महासभा के सामने पेशी के लिए भेज दिया।

मिशनाह के अनुसार किसी का न्याय करते समय जिसे झूठा नबी माना गया हो, पूरी सभा उपस्थित होना आवश्यक था।[3] परन्तु इस मामले में इस नियम का पालन नहीं किया गया। अरिमतिया का यूसुफ सभा का एक सदस्य था (मरकुस 15:43; लूका 23:50)। सम्भवतया निकुदेमुस भी था (यूहन्ना 3:1; 7:50, 51; 19:38, 39)। स्पष्ट रूप में इन दोनों में से कोई भी उस रात वहां नहीं था (देखें लूका 23:51, 52)।

यीशु को अगली सुबह दण्ड के अन्तिम मत के लिए पूरी सभा के सामने लाया गया (27:1; मरकुस 15:1; लूका 22:66)। सभा में इकहत्तर सदस्य होते थे जिनमें सत्तर आम सदस्य और महायाजक होता था, जो प्रमुख न्यायाधीश का काम करता था। यह गिनती परमेश्वर द्वारा मूसा को अपनी सहायता के लिए सत्तर न्यायी ठहराने की बात कहने पर आधारित थी (गिनती 11:16)।[4] वे अर्धचक्कर के आकार में बैठते थे ताकि हर सदस्य दूसरे सदस्यों को देख सकें। दो कलर्क उनके सामने होते, जिनमें एक दोषी के पक्ष में तर्क लिखता और दूसरा दोषी ठहराने के तर्क लिखता। हर सदस्य अपना अपना निर्णय देता था।[5]

इन यहूदी लोग जो आम तौर पर अपने नियमों को मानने में अतिसावधान रहते थे, पूरी तरह से यीशु को दोषी ठहराने के लिए उन नियमों को अनदेखा कर दिया। (1) उन्होंने यीशु को रात के समय पकड़कर और दिन चढ़ने से पहले महायाजकों के पास आकर उन नियमों की अनदेखी की।[6] (2) कानूनी कार्यवाहियां मन्दिर के प्रांगण के भीतर ही होती थीं[7] जो कि निश्चित रूप में महायाजक का घर नहीं था। (3) मृत्युदण्ड के मामले सब्त या पर्व की शाम को नहीं सुने जा सकते थे।[8] (4) उन्होंने ये सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी गवाही मेल खाती है या नहीं गवाहों से अलग अलग पूछने को नजरअन्दाज कर दिया।[9] (5) आम तौर पर मृत्युदण्ड का निर्णय लेने के लिए आधिकारिक रूप में इसकी घोषणा से पहले एक पूरी रात बीतनी आवश्यक थी।[10]

आयत 58. पतरस दूर से [यीशु] के पीछे-पीछे गया परन्तु **महायाजक के आंगन**[11] में रुका गया। गतसमनी में होने वाली घटनाओं से वह कितना परेशान हुआ होगा। 26:56 कहता है कि "सब चेले उसे छोड़कर भाग गए" इस कारण हम मान लेते हैं कि पतरस भी भाग गया होगा। तौभी वह कुछ सुरक्षित दूरी से गुमनाम रहने की कोशिश करते हुए भीड़ का पीछा करने के लिए लौट आया।

आंगन में पतरस **प्यादों के साथ बैठ गया** और यीशु के मुकदमे का **अन्त देखने को** आग तापने लगा (यूहन्ना 18:18)। "प्यादों" के स्थान पर अन्य संस्करणों में "रखवालों" (NIV;

NRSV) या "सहायकों" (NEB; NJB) है। यहां इस्तेमाल हुए यूनानी शब्द *hupēretēs* का अर्थ अपने अधिकारी के अधीन होने के कारण किसी दूसरे की सहायता करने वाला है।

और चेला जो जुलूस के पीछे-पीछे गया, जिसे यूहन्ना माना जाता है, आंगन में पहले चला गया। उसने द्वारपाल से बात की जिसने फिर पतरस को भी अन्दर आने दिया (यूहन्ना 18:15, 16)। पतरस और यूहन्ना इन घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी थे, इस कारण उन्होंने यह जानकारी मत्ती और दूसरे चेलों को बता दी होगी

आयत 59. यीशु किसी भी अपराध का दोषी नहीं था, इस कारण **महायाजक** और महासभा के दूसरे सदस्यों को उसके **विरोध में झूठी गवाही** देने वाले बेईमान लोगों को ढूंढ़ना पड़ा। उन्हें मृत्युदण्ड देने का अधिकार नहीं था (1:19; 10:18; 12:14 पर टिप्पणियां देखें),[12] जिस कारण उन्हें ऐसा दोष ढूंढ़ना आवश्यक था, जिससे रोमी हाकिम को यकीन हो जाता कि यीशु **मार डालने** के योग्य था। यहां पर **सारी महासभा** वाक्यांश का अर्थ भी अक्षरशः नहीं लिया जाना चाहिए। मत्ती सम्भवतया यह कह रहा था कि उस रात इकट्ठा हुए सभी मैंबरों में से हर कोई यीशु के विरोध में था।[13]

आयतें 60, 61. पहले तो गवाही देने के लिए **बहुत से झूठे गवाहों** ने गवाही दी, परन्तु उनकी गवाही मेल नहीं खाती थी (मरकुस 14:55, 56)। व्यवस्था के अनुसार दो या तीन गवाहों की गवाही के मेल खाए बिना मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता था (गिनती 35:30; व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15)। कुछ देर के बाद **दो गवाह** आए जिसमें दोनों यीशु की बात दोहरा रहे थे, "**मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं**" (देखें 27:40)। तौभी उनकी गढ़ी हुई कहानियां मेल नहीं खाती थीं (मरकुस 14:59)।

यहूदियों द्वारा मन्दिर के विरोध में बोलना सबसे बड़ा अपराध माना जाता था (प्रेरितों 6:12-14)। यीशु ने अकेले में चाहे मन्दिर के पतन की भविष्यवाणी की थी (24:1, 2) परन्तु उसने इसे तीन दिन में दोबारा बनाने की बात कभी नहीं की थी। उसने यह अवश्य कहा था कि *यहूदी* लोग "इस मन्दिर" को नष्ट कर देंगे और उसने इसे तीन दिन में खड़ा कर देना था (यूहन्ना 2:19)। परन्तु जिस मन्दिर की बात उसने की थी वह उसकी देह थी; वह तो अपनी मृत्यु और जी उठने का संकेत दे रहा था (यूहन्ना 2:21, 22)।

आयतें 62, 63. महायाजक ने जब **खड़े होकर** यीशु से अपने बचाव में उत्तर देने को कहा, तो पहले वह **चुप रहा**। यह यशायाह 53:7 का पूरा होना था:

> वह सताया गया, तौ भी वह सहता रहा
> और अपना मुंह न खोला;
> जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय
> वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है,
> वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला।

भजन संहिता 38:12-14 में भी ऐसी ही भाषा मिलती है।

यीशु की खामोशी से स्पष्ट रूप में महासभा पर बड़ा असर पड़ा। आम तौर पर आरोपी व्यक्ति हर आरोप का उत्तर देने और अपने निर्दोष होने की सफाई देने का प्रयास करते थे पर

यीशु ने कुछ नहीं कहा।[14] वह क्रूस पर जान के लिए दृढ़संकल्प था इसलिए उसे अपने लिए किसी सफ़ाई की आवश्यकता नहीं थी।

यीशु की खामोशी के उत्तर में, **महायाजक ने उस से कहा, "मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे।"** व्यवस्था के अनुसार न्याय करने वाले को गवाह को बुलाने का अधिकार होता था (लैव्यव्यवस्था 5:1)।[15] अनुवादित शब्द "शपथ देता हूं" के यूनानी शब्द (*exorkizō*) का अर्थ "किसी से शपथ दिलवाना" या "शपथ देना" है। NRSV में है, "मैं तुझे जीवते परमेश्वर के सामने शपथ देता हूं।"

काइफा यीशु के विरुद्ध मृत्युदण्ड का आधार बनाने की कोशिश कर रहा था। यदि उसने "मसीहा" अर्थात यहूदियों का राजा होने का दावा किया था तो इस व्याख्या को रोमी सरकार के लिए विद्रोह माना जाना था (देखें प्रेरितों 17:7)। यदि उसने "परमेश्वर का पुत्र" होने का दावा किया तो यह यहूदियों में परमेश्वर की निंदा माना जाता था।

पुराने नियम में एक इस्राएली राजा "परमेश्वर का [गोद लिया हुआ] पुत्र" के रूप में देखा जाता था (भजन संहिता 2:12)। अपने राज्यभिषेक के दिन वह पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधि बन गया। यीशु के लिए इस्तेमाल किए जाने पर जो सबसे बड़ा राजा है, "परमेश्वर का पुत्र" वाक्यांश उसके परमेश्वर होने का संकेत देता है (3:17; 4:3, 6; 8:29; 14:33; 16:16; 27:40, 43, 54)।

आयत 64. यदि यीशु महायाजक के प्रश्न का उत्तर देने में नाकाम रहता तो इसका अर्थ अपने आप में यह मान लेना लगाया जाता कि वह मसीह नहीं है। परन्तु उसे मालूम था कि सच्चाई से उत्तर देने पर उसके शब्दों का इस्तेमाल उसी के लिए किया जाएगा।

यीशु ने महायाजक को यह कहते हुए उत्तर दिया, **"तुम ने आप ही कह दिया।"** यह "हां" कहने का परोक्ष ढंग था, जिसने प्रश्न पूछने वाले की बात पर ज़ोर दिया। इस अध्याय में पहले यीशु ने यहूदा को ऐसे ही उत्तर दिया था (26:25)।

फिर यीशु ने यह कहते हुए, **"वरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे"**[16] स्पष्ट किया कि इसका क्या अर्थ है। उन मिलिटेंट मसीहा से अपने आपको मिलाने के बजाय जिनकी उम्मीद लोग करते थे, यीशु ने अपने आपको सबके प्रभु और न्याय करने वाले के रूप में दिखाया। उसने निडरता से यह बात कही, चाहे यह उसकी वर्तमान स्थिति से मेल खाती नहीं लगती।[17]

यीशु के विवरण में दानिय्येल 7:13, 14 और भजन संहिता 110:1 दोनों आते हैं। दानिय्येल 7 में आकाश के बादलों पर एक अविनाशी राज्य को लेने के लिए अतिप्राचीन (परमेश्वर पिता) के पास मनुष्य का पुत्र आ रहा है (देखें 24:30)। भजन संहिता 110 में जो मसीहा से जुड़ा भजन, प्रभु जातियों के ऊपर राज करते हुए, परमेश्वर के दाहिने हाथ सिंहासन पर बैठा है (देखें 22:42-45)। यहां यीशु ने "सर्वशक्तिमान" शब्द का इस्तेमाल "परमेश्वर के गोल-मटोल शैली के रूप में किया जिसका नाम दूसरी सदी ई.पू. के बाद यहूदी लोग लेने से हिचकिचाते थे।"

आयतें 65, 66. एक अर्थ में अपने शत्रुओं को सच बताकर यीशु ने अपने ऊपर अभियोग लगाया था। उसकी गवाही के जवाब में, **महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, इस ने**

परमेश्वर की निन्दा की है। आम तौर पर परमेश्वर याजकों को अपने कपड़े फाड़ने को नहीं कहता था (लैव्यव्यवस्था 10:6; 21:10)। तौभी यहूदी परम्परा के अनुसार न्यायियों के लिए परमेश्वर की निंदा किए जाने को देखते हुए ऐसा करना आवश्यक था।[19]

काइफा को उसके विरोध में और गवाहों का **प्रयोजन ही नहीं दिखा।** उसने घोषणा की कि यीशु ने यह मानकर कि वह परमेश्वर का पुत्र है **परमेश्वर की निन्दा** स्वीकार कर ली है। जब काइफा ने शेष सभा से सदस्यों से अपना विचार पूछा, उन्होंने उत्तर दिया, **यह वध होने के योग्य है।** मृत्यु का दण्ड परमेश्वर द्वारा उसकी नाम की निंदा किए जाने के मामलों में दिए जाने की सिफारिश की (लैव्यव्यवस्था 24:10–16)।

आधिकारिक रूप में किसी पर परमेश्वर की निन्दा का आरोप तब तक नहीं लगता था जब तक उसने परमेश्वर का नाम न लिया हो,[20] इसलिए मसीहा होने का दावा (चाहे झूठा ही हो, चाहे यीशु को छोड़ किसी और ने भी किया हो) मृत्युदण्ड के योग्य नहीं था। परन्तु यहूदियों ने बाद में कहा, ''हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार यह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया'' (यूहन्ना 19:7)।

आयतें 67, 68. हन्ना के सामने यीशु के जाने पर एक प्यादे ने उसके मुंह पर थप्पड़ जड़ दिया क्योंकि उसने महायाजक से प्रश्न करने का साहस किया था (यूहन्ना 18:21, 22)। जब यीशु को काइफा के सामने लाया गया तो दुर्व्यवहार और सताव फिर से हुआ।

अपने कामों के द्वारा, सभा ने यीशु और उसके दावों को नकार दिया। कइयों ने **उसके मुंह पर थूका,** जो कि किसी यहूदी से किए जाने वाले सबसे बड़े अपमानों में से एक था। उन्होंने **घूंसे मारे और औरों ने थप्पड़ भी मारे।** मरकुस 14:65 कहता है कि ये लोग ''प्यादे'' थे।

यीशु को थप्पड़ मारते हुए वे कहते थे, **''हे मसीह, हम से भविष्यवाणी करके कह कि किस ने मुझे मारा?''** मरकुस और लूका दोनों संकेत देते हैं कि इस समय यीशु की आंखें बांधी गई थीं (मरकुस 14:65; लूका 22:64), जो ऐसा विवरण है कि दृश्य को समझना आसान बना देता है। प्यादे अंधे व्यक्ति की बात को तोड़ मरोड़कर इसका मजाक उड़ा रहे थे, इस विचार का कि यीशु नबी है। यदि वह सचमुच नबी होता तो वह उस व्यक्ति को देखे बिना उसका नाम बताकर पहचान लेता कि उसने किसने मारा है।

पतरस के इनकार (26:69-75)

[69]और पतरस बाहर आंगन में बैठा हुआ था; कि एक लौंडी ने उसके पास आकर कहा, तू भी यीशु गलीली के साथ था। [70]उस ने सब के साम्हने यह कहकर इन्कार किया और कहा, मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है। [71]जब वह बाहर डेवढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने उसे देखकर उनसे जो वहां खड़े थे कहा; यह भी तो यीशु नासरी के साथ था। [72]उसने शपथ खाकर फिर इन्कार किया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता। [73]थोड़ी देर के बाद, जो वहां खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर उससे कहा, सचमुच तू भी उनमें से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है। [74]तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता; और तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी। [75]तब पतरस को

यीशु की कही हुई बात स्मरण आई कि मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा और वह बाहर जाकर फूट-फूट कर रोने लगा।

आयत 68 के एक दृश्य के बाद जहां भविष्यवाणी करने की यीशु की योग्यता को ठुकराकर ठट्ठा उड़ाया गया था मत्ती ने एक दृश्य जोड़ा, जहां यीशु की भविष्यवाणी पूरी हुई थी।[21] पतरस ने कहा था कि दूसरे चाहे सब लोग चले जाएं पर वह यीशु का इनकार कभी नहीं करेगा (26:33, 35)। परन्तु प्रभु ने उसे बताया था कि मुर्ग के बांग देने से पहले तीन बार उसने प्रभु का इनकार करना था (26:34)।[22] पतरस का इरादा अपनी बात पर खरा उतरने का था। गतसमनी में वह मरने तक अपने प्रभु के लिए लड़ने को तैयार था (26:51)। पतरस सामना न करने के साथ-साथ यीशु द्वारा उसको डांटने से प्रेरित के पिछले समर्पण को गहरा धक्का लगा होगा (26:52-54)।

आयत 69. पतरस जब **बाहर आंगन में बैठा हुआ** शत्रु की "आग तापने लगा" (मरकुस 14:54) तो **एक लौंडी** ने उसे पहचान लिया कि यह तो यीशु के चेलो में से है। उसने घोषणा की, **"तू भी यीशु गलीली के साथ था।"** यीशु का पालन-पोषण गलील में हुआ और अपनी अधिकतर सेवकाई में वह वहीं था, इस कारण यरूशलेम के रहने वाले उसे "गलीली" कहते थे।

आयत 70. पतरस ने **"मैं नहीं जानता कि तू क्या कह रही है"** यीशु का साथी होने से **इनकार** कर दिया। शायद डर के मारे वह बाहर ड्योढ़ी में चला गया (मरकुस 14:68)।[23]

आयत 71. पतरस के और अलग स्थान ढूंढ़ने के प्रयास ने उसे और चमका दिया। जब ड्योढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने खुलेआम सबको बता दिया, **"यह भी तो यीशु नासरी के साथ था।"** इस बार यीशु की पहचान उसके गृहनगर से की गई थी (देखें 2:23)।

आयत 72. एक बार **फिर** पतरस ने प्रभु का **इनकार किया** और इस बार उसने **शपथ खाकर** कहा। जब उसने यीशु का नाम लिए बिना कहा, **"मैं उस मनुष्य को नहीं जानता,"** तो वह घृणा की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल कर रहा था। पतरस केवल इतना ही इनकार नहीं कर रहा था कि वह यीशु का चेला है, बल्कि यह भी दावा कर रहा था कि वह जानता ही नहीं है कि यीशु कौन है। मत्ती यह नहीं बताता कि पतरस ने क्या शपथ खाई।

आयत 73. दासी के साथ पतरस के पिछले सामने और अन्तिम इनकार के बीच एक घण्टा बीत गया (लूका 22:59)। कुछ लोग जो पास खड़े थे उन्होंने देखा होगा कि क्या हुआ है और वे यह निर्णय लेने की कोशिश कर रहे थे कि **पतरस** यीशु के चेलों में से **एक** है या नहीं। उन्हें उसकी भाषा से यकीन हो गया कि वह उसके चेलों में से है। **जो पास खड़े थे** उन्होंने उससे कहा, **"क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है।"** वे उसके बोलचाल से बता पाए कि वह भी गलीली है (मरकुस 14:70)।

पुराने नियम के समयों में भी इस्राएल के लोगों की इलाके के आधार पर जहां वह रहते थे बोलने के अलग-अलग लहजे होते थे (न्यायियों 12:1-6)। पहली सदी के समय में यह अन्तर मुख्यतया यहूदिया (दक्षिण) और गलील (उत्तर) में रहने वालों में पाए जाते थे।

आयत 74. इस अन्तिम आरोप के उत्तर में पतरस यह कहते हुए कि **"मैं उस मनुष्य को नहीं जानता"** अपने आपको **धिक्कारने और शपथ खाने लगा।** उसने अपने ऊपर परमेश्वर

की ओर से धिक्कारते हुए उसने कहा कि यदि वह सच नहीं बोल रहा तो परमेश्वर की ओर से उस पर धिक्कार है (देखें रूत 1:17; 1 शमूएल 3:17; 14:44; 20:13; 25:22)। उसने अपने दावे के समर्थन के लिए कई शपथें खाईं (देखें 26:72)। धिक्कारों और शपथों के मिलाए जाने पर वे तीन में से एक इनकार बन गई। पतरस के तीसरे इनकार पर, तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी। यह बिल्कुल वैसे हुआ जैसे प्रभु ने भविष्यवाणी की गई थी (26:34)।[24]

आयत 75. मुर्ग के बांग देने के बाद, ''प्रभु ने घूमकर पतरस की ओर देखा'' (लूका 22:61)। यह देखना कैसा अजीब होगा। तभी पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई और उसे ध्यान आया कि उसने क्या किया है। गहरे शोक से भरा वह बाहर जाकर फूट-फूट कर रोने लगा (देखें 2 कुरिन्थियों 7:10)।

✧✧✧✧✧ **सबक** ✧✧✧✧✧

पतरस का गिरना और वापस आना (26:69-75)

हम में से कितने ही लोग अपने आपको पतरस के साथ मिला सकते हैं। वह आवेगी, जिज्ञासु, उतावला और निर्बल था। इसके बाद कभी कोई इतनी उंचाई तक नहीं गया और न इतना नीचे गिरा। यह कैसे हो सकता है कि कोई प्रभु के साथ इतना नजदीकी से जुड़ा हो और उसे जानने से इनकार कर दे? जिन बातों ने उसे गिराया वही हमें गिरा सकती हैं।

पतरस के गिरने में कदम। पतरस को ध्यान नहीं था कि वह कितना कमजोर है (14:22-31; 16:21-23; 26:30-35; यूहन्ना 18:10, 11)। वह सो गया जबकि उसे प्रार्थना करते होना चाहिए था कि वह परीक्षा में न पड़े (26:36-46), वह दूर से पीछा कर रहा था जबकि उसे यीशु के लिए प्रार्थना करने वाले भाइयों की संगति में होना चाहिए था (26:58) और उसने शत्रु से मित्रता कर ली, जबकि उसे यूहन्ना के साथ होना चाहिए था ताकि दो जन एक दूसरे को सहारा दे सकते (लूका 22:55)। अपने निम्नतम स्तर में उसने शपथें खाकर और अपने ऊपर धिक्कार देते हुए प्रभु का इनकार किया (26:69-75)।

पतरस की वापसी में कदम। जब यीशु के देखने से पतरस को समझ आया तो उसे वे बातें याद आईं जो उसने कही थीं (लूका 22:61)। पतरस शर्मिंदा था (लूका 22:62) और उसने सचमुच में मन फिराया (यूहन्ना 21:15-19)। वह मरने तक विश्वासयोग्य रहा (देखें यूहन्ना 21:18, 19)। एक मजबूत परम्परा के अनुसार पतरस को रोम में क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला गया।[25] कहते हैं कि उसने क्रूस पर उलटा लटकाए जाने के लिए कहा क्योंकि वह अपने आपको उसी तरह क्रूस पर चढ़ाए जाने के योग्य नहीं मानता था, जैसे उसका प्रभु चढ़ाया गया था।[26]

मजबूत से मजबूत मसीही लड़खड़ा सकते हैं, परन्तु हमें गिरने की आवश्यकता नहीं है। बाद में कलीसिया के अगुवे के रूप में पौलुस ने मसीही लोगों को बढ़ने और ठोकर खाने से बचने में सहायता के लिए मार्गदर्शन की बातें लिखीं (2 पतरस 1:5-11)।

टिप्पणियां

[1]यह तथ्य कि रोमी सिपाही यीशु को यहूदी अधिकारियों के पास लेकर गए, हैरान करने वाला नहीं होना चाहिए। पौलुस के मामले में भी ऐसा ही देखा जा सकता है, जिसे रोमी सेनापति कलौदियुस लुसियास द्वारा सवाल जवाब के लिए यहूदी महासभा के सामने पेश कर दिया गया (प्रेरितों 22:30)। [2]रोमी राज्यपाल पिलातुस के सामने यीशु के विरुद्ध आरोप लगाने का अधिकार काइफा के पास था न कि हन्ना के पास था। [3]मिशनाह *सन्हेद्रिन* 1.1, 4, 5. [4]वही, 1.6. [5]वही, 4.3. [6]वही, 4.1. [7]वही, 11.2; *मिदोथ* 5.4. परन्तु महासभा के मिलने का स्थान इस समय से पहले मन्दिर के पहाड़ के बाहर के स्थान में बदल दिया गया हो सकता है। अधिक जानकारी के लिए, देखें *डिक्शनरी ऑफ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैकनाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोयस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 851 में ब्रूस कोरले, ''ट्रायल ऑफ जीज़स।'' [8]मिशनाह *सन्हेद्रिन* 4.1. [9]वही, 3.6; 5.3, 4. [10]वही, 4.1.

[11]इस आयत में, यूनानी शब्द (*aulē*) ''आंगन'' के लिए है न कि महल के लिए (26:3 पर टिप्पणियां देखें)। [12]देखें टालमुद *अबोदाह ज़रह* 8बी। [13]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 681. [14]वही, 683. [15]देखें मिशनाह *शेबूथ* 4.3. [16]लूका ने यीशु के इन शब्दों को सुबह की पेशी के संदर्भ में रखा है जब पूरी महासभा इकट्ठी हुई (लूका 22:66–71)। वे यीशु द्वारा पिछली रात की पेशी से दोहराए गए होंगे। सुबह की सभा लगाकर यहूदी अगुवे स्पष्टतया अधिकारी के सामने रात की अवैध पेशी से बातें निकालने की कोशिश कर रहे थे। [17]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 801. [18]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 153. [19]मिशनाह *सन्हेद्रिन* 7.5. [20]वही।

[21]मौरिस, 687. [22]मरकुस 14:30 कहता है मुर्ग के ''दो बार'' बांग देने से पहले पतरस ने तीन बार यीशु का इनकार किया। [23]मरकुस 14:68 में कुछ यूनानी हस्तलिपियों में ''और एक मुर्ग ने बांग दी'' अर्थात यानी पहली बार। (ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क., [स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994], 97.) [24]एक बार फिर, मरकुस ने लिखा कि मुर्ग ने ''दो बार'' बांग दी (मरकुस 14:72)। [25]यूसबियुस *इक्लेसिटिकल हिस्ट्री* 2.25. [26]*एक्ट्स ऑफ पीटर एण्ड पॉल।*